तुलसी का समन्वयवाद: दर्शन, धर्म और मानवता का त्रिवेणी संगम

डॉ. एन.पी. प्रजापति
सहायक प्राध्यापक हिंदी एवं शोध निर्देशक
पीएम कॉलेज ऑफ एक्सीलेन्स शासकीय राजनारायण स्मृति महाविद्यालय बैढ़न जिला - जिला – सिंगरौली (म.प्र.)

सारांश -

किसी भी युग का महान रचनाकर अपने समय के संकटों एवं टकराहटों की पहचान करता है और उसके समानान्तर एक ऐसा मार्ग ढूँढने का प्रयत्न करता है जहाँ विरोधी पक्ष अपने अतिवादों का परित्याग कर साथ-साथ चल सकें। गोस्वामी तुलसीदास ऐसे ही समन्वयवादी रचनाकार हैं और इसीलिये वे महान रचनाकार भी हैं। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने उनकी समन्वय-साधना की गंभीर प्रशंसा करते हुए लिखा भी है कि- 'तुलसीदास को जो अभूतपूर्व सफलता मिली उसका कारण यह था कि वे समन्वय की विशाल बुद्धि लेकर उत्पन्न हुए थे। भारतवर्ष का लोकनायक वही हो सकता है जो समन्वय करने का अपार धैर्य लेकर सामने आया हो।'

बीज शब्द –समरसता, भाईचारा,लोकनायक, समन्वयवाद, दार्शनिक।

प्रस्तावनाः-

महाकवि गोस्वामी तुलसी का जन्म ऐसे समय में हुआ जब भारतीय समाज में धर्म,संस्कृति, मान्यताओं, विचारों,परम्पराओं, राजनीति आदि समस्त क्षेत्रों में विसंगति का बोलवाला था और विषमता - विभेद एवं वैमनस्य जनमानस में व्याप्त था। शैवों और वैष्णवो मैं पारस्परिक ईर्ष्या द्वेष बढ़ता जा रहा था। तुलसी से पूर्व संत कवियों ने सारे भारत में भावात्मक एकता स्थापित करने का प्रयास किया किंतु तुलसीदास ने इस विषमता को दूर करने के लिए समन्वय का अनूठा प्रयास किया। उनके इस योगदान की प्रशंसा करते हुए आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने उन्हें तथागत बुद्ध के बाद भारत का सबसे बड़ा लोकनायक मानते हुए लिखा है - ''लोकनायक वही हो सकता है, जो समन्वय कर सके। तुलसी का संपूर्ण काव्य समन्वय की विराट चेष्टा है।'' इस शोधालेख हम गोस्वामी तुलसी दास जी के काव्य में समन्वय को निम्न बिंदुओं के माध्यम से स्पष्ट करने का प्रयास कर रहे है :-

1. शैव और वैष्णव का समन्वय:- शैव और वैष्णव के मतभेद को सुलझाने के लिये उन्होंने प्राय: शिव और राम को एक-दूसरे का भक्त बताया। भारतीय विचारधारा में त्रिदेव की परिकल्पना ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश के रूप में की गई है। जिसमें ब्रह्म सृष्टि को उत्पन्न करते हैं, विष्णु उसका पालन करते हैं जबकि शिव उसका संहार करते हैं। विष्णु के भगत वैष्णव तथा शिव के भगत शेव कहलाते हैं। कालांतर में वैष्णव विष्णु को सृष्टि का उत्पादक पालनहार एवं संहारक मानने लगे तो सेवर ने इन तीनों के लिए शिव को उत्तरदाई मानते हुए उन्हें सर्वशक्तिमान मानकर महिमामंडित कर दिया। धीरे धीरे सेवर और वैष्णो का यह वैमनस्य इतना बड़ा कि वे एक दूसरे के आराध्य देवता को हेय और तुछ बताने लगे। तुलसी के समय में यह विद्वेष अपने चरम पर था अतः उन्होंने रामचरित्र मानस में शिव को विष्णु के अवतार राम का उपासक दिखलाकर शिव से यह कहलवाया:

सोई मम ईस्ट देव रघुवीरा। शेवत जाहि सदा मुनि धीरा॥

अर्थात - श्री रघुवीर (राम जी) मेरे (भगवान शंकर के) इष्टदेव हैं जिन्हें सभी ऋषि-मुनि -संत-भक्त भी अपने इष्टदेव मानते हैं (श्री राम नाम-श्री राम चरित-श्री राम धाम का सेवन करते हैं।तो दूसरी और राम भगवान शिव को अपना आराध्य मानकर रामेश्वरम में उनकी स्थापना करते हैं यही नहीं अपितु वह यह भी कहते हैं:

शिव द्रोही मम दास कहावा। सो नर मोहि सपनेहूं नहीं भावा।

राम को शिव का अनन्य भगत सिद्ध करते हुए तुलसी ने सेवर वैष्णव मतों का अनूठा समन्वय किया है तुलसी ने राम और शिव में अवैध मानते हुए कहा है

प्रभु पद प्रीति न सामुझि नीकी।
तिन्हहि कथा सुनि लागिहि फीकी॥
हरि हर पद रति मति न कुतर की।
तिन्ह कहँ मधुर कथा रघुबर की॥

जिन्हें न तो प्रभु के चरणों में प्रेम है और न अच्छी समझ ही है, उनको यह कथा सुनने में फीकी लगेगी। जिनकी श्री हरि (भगवान विष्णु) और श्री हर (भगवान शिव) के चरणों में प्रीति है और जिनकी बुद्धि कुतर्क करने वाली नहीं है (जो श्री हरि-हर में भेद की या ऊँच-नीच की कल्पना नहीं करते), उन्हें श्री रघुनाथजी की यह कथा मीठी लगेगी

संकर प्रिय मम द्रोही, सिव द्रोही मम दास।
ते नर करहिं कलप भरि, घोर नरक महुँ बास

अतः तुलसी का मत है कि केवल शंकर या केवल राम की भक्ति करने वाला तथा दूसरे से द्रोह करने वाला सच्चा ईश्वर भगत नहीं है उसे किसी के प्रति द्रोह नहीं करना चाहिए तुलसी ने इस प्रकार से वो और वैष्णव में समन्वय स्थापित करने का भरसक प्रयास किया।

2- नर और नारायण का समन्वय:- तुलसी ने राम को दशरथ पुत्र के रूप में स्वीकार करते हुए परब्रह्म परमात्मा के रूप में भी स्वीकार किया है धर्म की स्थापना एवं असुरों के विनाश के लिए भगवान विष्णु ही राम के रूप में प्रकट हुए हैं:

भए प्रगट कृपाला दीन दयाला कौशल्या हितकारी।
हर्षित महतारी मुनि मन हारी अद्भुत रूप बिचारी॥

राम भले ही न लीला कर रहे हो किंतु अंततः वे अखंड अनंत आज अनिवार्य रूप एवं अचल वर्मा है भक्तों के हित के लिए वे दीनबंधु ही असुर संहार करने हेतु पृथ्वी पर अवतरण हुए हैं:-

विप्र धेनु सुर संत हित लीन है मनोज जी अवतार।
निज इच्छा निर्मित तनु माया गुण गो पार॥

राम मन वाणी और बुद्धि से उतर के हैं जो धर्म की रक्षा के लिए तथा असुरों का संहार करने के लिए अवतार लेते रहते हैं और सज्जनों का दुख दूर करते हैं:

राम अवतार के बुद्धि मन वाणी मत हमार अश्विन ही स यानी।
जब जब हुई धर्म के हानी। बाड़ी असुर अधम अभिमानी॥
करही अनीति जाए नहीं बरनी। सिद्धि विपर बीनू सूर्य धरनी॥
तब तब प्रभु धरी विविध शरीरा। हर ही कृपा निधि सज्जन पीरा॥

3- साहित्यिक क्षेत्र में समन्वय तुलसी ने अपने समय में प्रचलित दोनों काव्य भाषाओं अवधी और ब्रज में काव्य रचना करके समन्वय का अनूठा प्रयास किया उन्होंने राम चरित्र मानस बरवै रामायण पार्वती मंगल जानकी मंगल रामलला नेहरू की रचना शुद्ध साहित्यिक परिनिष्ठित अवधी भाषा में की तो विनय पत्रिका कवितावली दोहावली गीतावली में बृज भाषा का प्रयोग किया अपने समय में प्रचलित सभी काव्य शैलियों का प्रयोग भी तुलसीदास ने किया है।

रामचरितमानस दोहा चौपाई शैली में लिखा गया महाकाव्य है तो विनय पत्रिका की रचना पद शैली में हुई है कवितावली कविता सवैया शैली में गीतावली पद शैली में दोहावली दोहावली में तो बरवै रामायण बर्वे शैली में रची गई कृतियां हैं रामचरित्र मानस एवं विनय पत्रिका की अतिथियों में कवि ने संस्कृत का प्रयोग करते हुए भाषा एवं संस्कृत का समन्वय किया स्रोतों का प्रयोग स्थितियों में करते हुए उन्होंने कथा शैली एवं स्त्रोत शैली का समन्वय किया इस विवेचन से स्पष्ट है कि तुलसी ने रामचरितमानस में साहित्यिक क्षेत्र में समन्वय का अनूठा प्रयास किया।

4- पारिवारिक क्षेत्र में समन्वय:- तुलसी ने धर्म और अध्यात्म के क्षेत्र में ही नहीं अपितु पारिवारिक क्षेत्र में भी समन्वय का अनूठा प्रयास किया पारिवारिक एवं नैतिक मूल्यों के पक्षधर तुलसी मर्यादावादी कवि के रूप में जाने जाते हैं उनका रामचरितमानस व्यवहार का दर्पण है उनके पात्र परिवार के आदर्श को प्रस्तुत करते हैं राम के रूप में उन्होंने एक आदर्श उत्तर आदर्श भाई, आदर्श पति, आदर्श मित्र का स्वरूप प्रस्तुत किया भरत भ्रातृत्व भावना के आदर्श हैं तो लक्ष्मण अग्रज के प्रति सेवा भाव के हनुमान सेवक धर्म के आदर्श हैं तो विभीषण सच्चे भगत के और सुग्रीव मैत्री धर्म के आदर्श हैं तुलसीदास ने उन जीवन मूल्यों को रामचरितमानस में प्रस्तुत किया है जो भारतीय संस्कृति का पोषण करने वाले हैं तथा उनके उदास स्वरूप को प्रस्तुत करते हैं यह राज्य पाने के लिए संघर्ष नहीं है अपितु इस बात के लिए राम और भरत में मतभेद है कि राम अयोध्या का राजा बनना नहीं चाहते भरत को राज्य ग्रहण करने के लिए

कहते हैं तो उसे स्वीकार करने को तैयार नहीं अंततः चित्रकूट सभा में यह निर्णय हुआ कि अयोध्या के राजा राम ही होंगे किंतु वनवास की अवधि में भरत राजा के प्रतिनिधि बनकर अयोध्या की देखभाल करेंगे।

पिता के वचन का पालन करते हुए 14 वर्षों तक वनवास में रहकर राम ने आदर्श उत्तर होने का जो उदाहरण प्रस्तुत किया वैसा विश्व में अन्यत्र कहीं दिखाई नहीं पड़ता।

5- सगुण और निर्गुण का समन्वय- निर्गुण एवं सगुण के जटिल विवाद के शमन का प्रयत्न करते हुए उन्होंने कहा-

'सगुनहिं अगुनहिं नहीं कछु भेदा। गावहिं मनु पुरान बुध वेदा।।'

सामाजिक धरातल पर तुलसीदास ने पुरुष व नारी में, विभिन्न वर्णों में समन्वय का प्रयत्न किया। पारिवारिक धरातल पर पिता और पुत्र के बीच, भाई-भाई के बीच माँ और पुत्र के बीच आदि स्तरों पर समन्वय किया। तात्कालीन लोगों की मानसिकता को लक्षित करते हुए उन्होंने भाग्य तथा पुरुषार्थ में, भोग तथा त्याग में समन्वय किया। तुलसी से पहले भक्तों में इस बात पर भी संघर्ष चल रहा था कि ईश्वर शगुन है या निर्गुण सूरदास ने भ्रमरगीत प्रश्न में ईश्वर को सगुण साकार मानते हुए गोपियों द्वारा निर्गुण का खंडन करवाया और शगुन की महत्ता प्रतिपादित की किंतु तुलसीदास ने सगुण और निर्गुण के प्रश्न पर व्याप्त विद्वेष एवं वैमनस्य को दूर करते हुए उन दोनों में समन्वय करने का प्रयास किया वह कहते हैं कि यद्यपि ब्रह्मा निर्गुण निराकार अनघ अद्वैत अव्यक्त अविरल अना में अमल है तथापि वह दयालु दीन बंधु करुणा वत्सल भगत वत्सल तथा भक्तों पर कृपा करने के लिए धर्म की स्थापना के लिए सगुण रूप में प्रकट होता है भक्तों के प्रेम के वशीभूत होकर वही निर्गुण ब्रह्मा सगुण साकार हो जाता है:

अगुण अरूप अलख अज जोई। भगत प्रेमी बस शगुन सो हुई॥

तुलसी कहते हैं कि जैसे जल बर्फ और ओले बाहर से अलग-अलग लिखकर भी मिलते हैं एक ही तत्व जल के विविध रूप हैं उसी प्रकार एक ही ब्रह्मा कभी निर्गुण तो कभी सगुण रूप में दिखाई देता है इस प्रकार तुलसी ने अपने साहित्य में निर्गुण और सगुण ईश्वर में समन्वय स्थापित करने का प्रयास किया।

6- **राजा और प्रजा के बीच समन्वय :-** तुलसीदास जी के समय में राजा और प्रजा के बीच गहरी खाई थी। उन्होंने इस खाई को दूर करने का प्रयास किया। उन्होंने बताया- 'सेवक कर पद, नयन से, मुख सो साहिब होइ' अर्थात राजा को मुख के समान और प्रजा को हाथ, पैर व नेत्र के समान होना चाहिए। जिस तरह शरीर में मुख और अन्य अंगों के बीच तालमेल होता है, उसी तरह तुलसीदास जी ने राजा और प्रजा के समन्वय पर जोर दिया है।

मुखिया मुख सो चाहिए, खान-पान को एक।

पालइ पोषइ सकल अंग, तुलसी सहित विवेक॥

दूसरी और सेवक हाथ पैर और आंखों की तरह होने चाहिए:

सेवक कर पद नयन से मुख्य साहिबा होय।

इस प्रकार रामचरितमानस मी तुलसी ने एक और प्रजा के कर्तव्य का वर्णन किया तो दूसरी ओर शासक को उसके दायित्व का बोध कराते हुए राजा प्रजा में समन्वय का प्रयास किया।

7- दार्शनिक क्षेत्र में समन्वय:- तुलसी से पूर्व सभी विचार कोने शंकर द्वारा प्रतिपादित अद्वैतवाद का खंडन किया रामानुजाचार्य ने विशिष्टता द्वैतवाद का मधु अचार्य ने द्वैतवाद का विष्णु स्वामी ने शुद्ध अद्वैतवाद का तथा निंबार्काचार्य ने नवेद अद्वैतवाद का प्रचार करके एडमिट वादी विचारधारा का खंडन किया किंतु तुलसी ने अद्वैतवाद एवं विशिष्टता द्वैतवाद में समन्वय स्थापित करने का प्रयास किया।

विनय पत्रिका तुलसी ने शंकराचार्य के अद्वैतवाद के अनुरूप ही ब्रह्मा को आज सर्वज्ञ सत्य माना तथा जी और जगत को उपाधि के एवं मिथ्या निरूपित करते हुए अद्वैत वादी विचारधारा का समर्थन किया यही नहीं अपितु उन्होंने माया का स्वरूप भी शंकर के अनुसार ही निरूपित किया तथा पी वी रामानुजाचार्य द्वारा प्रवर्तित विशिष्ट अद्वैतवाद के अनुयाई थे तथा इसी कारण जीव को ईश्वर का अंश मानकर ईश्वर की ही भांति उसे चेतन अमल एवं अविनाशी मानते हैं ईश्वर अंश जीव अविनाशी चेतन अमल सहज सुख राशि सो मायावती एयू गोसाई बंदे हूं कि मर्कट की नई संसार को भी उन्होंने सुनने में निर्मित चित्र मानकर विशेषता द्वेत वादी विचारधारा का

समर्थन किया वह संसार के विषय में अपना मत व्यक्त करते हुए कहते हैं को कहें सत्य झूठ कहीं को जुगल प्रबल को माने तुलसीदास परिहार भरम शो आपन पहचाने वस्तुतः दार्शनिक क्षेत्र में व्याप्त वित्त अंडा बाद को दूर कर तुलसी सभी विचारधाराओं का समन्वय करने का प्रयास करते दिखाई देते हैं।

8- ज्ञान और भक्ति का समन्वय :- वस्तुत: तुलसीदास मध्यकाल के जिस सामंती परिवेश में विद्यमान थे, उसमें अनेक विरोधी शक्तियाँ समाज के विभिन्न स्तरों पर संघर्षरत थीं। तुलसीदास ने उन विरोधी विचारधाराओं में समन्वय स्थापित कके अत्यंत लोककल्याणकारी कार्य किया। दर्शन एवं साधना के धरातल पर समन्वय की चेष्टा करते हुए तुलसीदास ने भक्तिविरोधी ज्ञान को खारिज किया, किंतु भक्ति और ज्ञान में गहरा समन्वय स्थापित करते हुए लिखा-

'भगतिहिं ग्यानहिं नहिं कछु भेदा।'

तुलसी ने रामचरितमानस में ज्ञान और भक्ति का समय में भी किया है जबकि उन से पूर्व यह विवाद चलता था कि ईश्वर को प्राप्त करने के लिए कौन सा मार्ग श्रेष्ठ है ज्ञान मार्ग या भक्ति मार्ग ज्ञानी जन ज्ञान मार्ग को तो भगत जन भक्ति मार्ग को श्रेष्ठ प्रतिपादित करते थे किंतु तुलसी ने ज्ञान की कठिन ता का उल्लेख करते हुए भी भक्ति के लिए ज्ञान की महत्ता प्रतिपादित की और इस प्रकार इन दोनों का समन्वय किया वह कहते हैं कि ज्ञान मार्ग तलवार की धार के समान पहना है ज्ञान पंथ कृपाण कई धारा जबकि भक्ति मार्ग सरल सहज एवं सुगम है तथापि भक्ति और ज्ञान दोनों ही सांसारिक कष्टों से मुक्ति दिलाने में समर्थ हैं भक्ति ही ज्ञान नहीं नहीं कछु वेदा उधर ही भव संभव खेदा उत्तरकांड में निरूपित ज्ञान भक्ति प्रसंग में तुलसी ने ज्ञान को दीपक तथा भक्ति को मनी माना है और यह बताया है कि ज्ञान का दीपक बड़ी कठिनाई से प्रज्वलित होता है जो मोहम्मद आदि संतों को जलाकर राख कर देता है परंतु विषय रूपी वायु के चलने पर बुझी जाता है जबकि भक्ति रूपी मणि निरंतर दे दिए मान रहती है विषय विकार रूपी वायु उसे बुझा नहीं पाती तुलसी ने भले ही भक्ति मार्ग की सरलता एवं श्रेष्ठा प्रतिपादित की हो किंतु वे सूरदास की भांति ज्ञान की ने तो खिल्ली उड़ाते हैं और ने उसे व्यर्थ बताते हैं उनके अनुसार भक्ति ज्ञान और वैराग्य से युक्त होकर शोभा पाती है कहीं भक्ति भगवंत के संजू ज्ञान विराग वे यह भी कहते हैं कि वेदों में जिस भक्ति का प्रतिपादन किया गया है वह भी ज्ञान और वैराग्य से संयुक्त होकर शोभा पाती है श्रुति सम्मत हरि भक्ति पथ संजू विरती विवेक इस विवेचन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि तुलसी ने सर्वत्र ज्ञान भक्ति का समन्वय किया है।

9.साहित्यिक क्षेत्र में समन्वय:-तुलसीदास जी ने समन्वय की स्थापना हेतु अवधी व ब्रज भाषा दोनों में काव्य रचना की है। यही नहीं उन्होंने रामचरितमानस में संस्कृत में श्लोकों की रचना की है। उन्होंने मात्रिक व वार्णिक दोनों प्रकार के छंदों को अपनाया है। उन्होंने प्रबंध, मुक्तक और गीति सभी काव्य-रूपों को समान महत्त्व दिया हैI

निष्कर्ष :-सामाजिक धरातल पर तुलसीदास ने पुरुष व नारी में, विभिन्न वर्णों में समन्वय का प्रयत्न किया। पारिवारिक धरातल पर पिता और पुत्र के बीच, भाई-भाई के बीच माँ और पुत्र के बीच आदि स्तरों पर समन्वय किया। तात्कालीन लोगों की मानसिकता को लक्षित करते हुए उन्होंने भाग्य तथा पुरुषार्थ में, भोग तथा त्याग में समन्वय किया।

राजनीतिक धरातल पर उन्होंने राजा व प्रजा के कर्त्तव्यों का निर्धारण करते हुए दोनों के सम्यक् संबंध की व्यवस्था कर राजा व प्रजा के बीच समन्वय स्थापित किया। जब वे 'नहिं दरिद्र कोउ दुखी न दीना' कहते हैं तो आर्थिक स्तर पर भी उनकी समन्वय भावना दिखाई देती है। भाषा के धरातल पर भी उन्होंने संस्कृत और लोकभाषा का अद्भुत समन्वय किया। समग्रत: तुलसीदास समन्वय की विराट चेष्टा करने वाले कवि हैं। उनकी इस समन्वय-भावना ने मध्यकाल के बिखरते हुए समाज को बाँधने का महत् कार्य तो किया ही, भविष्य के लिये भी एक समाज-दृष्टि प्रदान की। तुलसी अपने समय के महान समन्वय वादी थे उन्होंने जीवन और जगत के हर क्षेत्र में समन्वय करते हुए सबको साथ लेकर चलने का स्तुति प्रयास किया खंडन मंडन की प्रवृत्ति से परे रहकर अखंडता को नकार कर तुलसी ने समन्वय वादी दृष्टि का परिचय दिया तथा समाज में व्याप्त कटुता विषमता विद्वेष वैमनस्य को दूर कर पारस्परिक स्नेही सहानुभूति सौहार्द क्षमता का वातावरण बनाया वह सच्चे अर्थों में महान समाज सुधारक समन्वय करता एवं लोक नायक थे।

संदर्भ सूची:-

1. हिंदी साहित्य का इतिहास , आचार्य रामचंद्र शुक्ल।
2. तुलसी ग्रंथावली, दूसरा खंड - कवितावली, (संत) रामचंद्र शुक्ल , भगवानदीन। पृष्ठ संख्या - 225
3. हिंदी साहित्य की भूमिका, डॉ हजारी प्रसाद द्विवेदी।
4. गोस्वामी तुलसीदास , आचार्य रामचंद्र शुक्ल। पृष्ठ संख्या - 35
5. श्रीरामचरितमानस , सप्तम सोपान, उत्तरकांड (संत) योगेंद्र प्रताप सिंह, पद संख्या - 21, पृष्ठ संख्या - 77
6. वही पृष्ठ - 78-79
7. हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास बच्चन सिंह, पृष्ठ संख्या -142
8. प्लेटो - रिपब्लिक -5, पृष्ठ संख्या -173 से 215
9. भारतीय सौंदर्य बोध और तुलसीदास - तुलसी साहित्य के सामंत विरोधी मूल्य।